आस्था साहस और संस्कृति का समागम नन्दा राजजात

नन्दादेवी आकाश छूने वाली 7,817 मीटर ऊँची चोटी है, यह दुनिया की सुन्दर मोहक और रोमांचकारी चोटियों में एक है। अपनी मोहकता और चुनौतियों के कारण इसे हिमालय का मोती भी कहा जाता है। यह अपने नाम के अनुरूप आनन्ददायी है, नन्दा देवी का अर्थ है, आनन्दमयी देवी (आनंदे, तिलोकान इति नन्दा)। गढ़वाल–कुमाऊँ की ईष्ट देवी नन्दा आध्यात्मिक दृष्टि से महाशक्ति भी है। किसी पर्वत शिखर के साथ इस तरह के जीवित मानवीय और सांस्कृतिक, धार्मिक रिश्तों की मिशाल दुर्लभ है। उत्तराखण्ड़ की लोक परम्पराओं और अनुश्रतियों में इसे कहीं ध्याण (बेटी) और कहीं माँ के स्वरूप में पूजा जाता है। पहाड़ के गढ़वाल अंचल में नन्दादेवी के प्रमुख मन्दिर लाता, नौटी, कुरूड़, कांसुवा, कोटी, कुलसारी, भगौती और कुमाऊँ अंचल में अल्मोड़ा, नैनीताल, रणचूला, सनेती प्रमुख है। चमोली, अल्मोड़ा एवं नैनीताल के नन्दा देवी मेले तो लोक सांस्कृतिक थाती की सर्वत्र छटा बिखेरते हैं। नन्दादेवी की राजजात तो सदियों से हिमालय क्षेत्र की सर्वाधिक लम्बी (280 किलोमीटर) पदयात्रा है। जो प्रतिवर्ष 12 वर्ष के अन्तराल में आयोजित की जाती है, जिसमें हजारों की संख्या में तीर्थ यात्री सैलानी और शौधार्थी इसमें सम्मिलित होते हैं। इसके अतिरिक्त कुरूड़ में तो प्रतिवर्ष छोटी लोक जात के रूप में इसका आयोजन किया जाता है। इसका समापन बेदनी में जाकर होता है। नन्दा राजजात मूलतः नन्दा देवी के मायके से ससुराल भेजने की धार्मिक परम्परा है। किवंदन्ती है, कि 9वीं सदी में राजा कनकपाल के स्वप्न में देवी ने देवधाम कैलाश जाने की इच्छा प्रकट की, तो इस प्रकार प्रथम बार राजजात का आयोजन किया गया था, तब राज पुरोहितों द्वारा इसे प्रति 12 वर्ष के अन्तराल में आयोजित करने की परम्परा प्रारम्भ हुई।

ऐतिहासिक तथ्य :–पहाड़ की एक लोक मान्यता के अनुसार चमोली गढ़वाल में स्थित चाँदपुर गढ़ी के तत्कालीन राजा भानुप्रताप बद्री विशाल के उपासक थे, देवताओं से वार्तालाप के लिए उनके पास एक सिद्ध श्रीयन्त्र था इसी लिए उन्हें बोलान्दा बद्री भी कहा जाता है। अनुश्रुति के अनुसार बोलान्दा बद्री राजा को बद्रीनाथ ने देवी का सन्देश दिया कि वह राजा कनकपाल से अपनी पुत्री का विवाह कर दें, इसी से उसका वंश चलेगा जब यह विवाह हुआ तो उसे राज्य की ईष्ट देवी के रूप में नन्दा की प्राप्ति हुई। भानुप्रताप के बाद जब कनकपाल चाँदपुर गढ़ का राजा बना तो उसने अपने छोटे भाईयों को चाँदपुर गढ़ी के पास काँसुवा में बसाया यहीं कुँवर जाति राजजात को अगुवाई भी करती है। राजजात यात्रा कब शुरू हुई, इसका कहीं कोई स्पष्ट उल्लेख इतिहास में नहीं मिलता है। कई इतिहासकार इसे आठवीं सदी से प्रारम्भ हुई मानते है। इसके कुछ ऐतिहासिक प्रमाण भी मिलते है, जैसे यात्रा मार्ग पर बगुवावासा में रखी गयी काले पत्थर की भगवान गणेश की मूर्ति आठवीं सदी की बताई जाती है जिसे कैलुवा विनायक कहा जाता है। उत्तराखण्ड राज्य गठन के उपरान्त श्री नन्दादेवी राजजात यात्रा प्रथम बार वर्ष 2014 में आयोजित हो रही है। उत्तराखण्ड़ में इतिहासकारों की मान्यता है कि नन्दा की जात परम्परा 16वीं शताब्दी के अन्तराल के बाद ही नियमित रूप से कुछ अन्तरालों के बाद होती रही है। राजा द्वारा की गई इस सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृति व्यवस्था के अन्तर्गत समाज के सभी वर्गों की हिस्सेदारी तत्कालीन पहाड़ी समाज की विशिष्ट सांस्कृतिक एवं साँझी संस्कृति का प्रतीक समझा गया है। परिणामतः सन् 1668 तक की यात्राओं में सभी प्रकार के प्रबन्ध स्थानीय स्तर पर लोक पारम्परिक सहयोग से आयोजित किये जाते रहे थे।

नन्दादेवी का प्रतीक–स्वर्णप प्रतिमा युक्त रिंगाल की पवित्र राज छंतोली एवं श्रीयंत्रः– राजगुरू नौटियालो की उपस्थिति में राजजात के कार्यक्रम की घोषणा राजवंशी कुँवरो की उपस्थिति व नेतृत्व में करने के बाद कॉसुवा के राजवंशी कुंवर पवित्र रिंगाल की राज छंतोली, चौसिंगिया खाडू व भगवती की स्वर्ण प्रतिमा लेकर नौटी पहुँचते हैं। नौटी में श्रीयंत्र भूमिगत है, जिसकी पूजा–अचर्ना की जाती है। चौसिंगिया मेढ़े के पथ–प्रदर्शन में पवित्र रिंगाल की स्वर्ण प्रतिमायुक्त राज छंतोली को लेकर नौटी से होमकुण्ड के लिए लाखो श्रद्धालु भक्त भगवती को मायके से ससुराल भेजने के लिए चल पड़ते है। उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रो में जात अर्थात यात्राये आयोजित होती है। इनमें राजजात सबसे विशिष्ट, धार्मिक, साहसिक, भावपूर्ण, रोमांचक एवं महत्वपूर्ण तीर्थ यात्रा है। गढ़वाल एवं कुमॉऊ क्षेत्र के राजा, प्रजा ही नहीं इस क्षेत्र के 500 से अधिक देवी देवताओ की छंतोलिया डोलिया, निशान, ध्वज, चार सींग के मेढे (चौसिंगिया खाडू) के नेतृत्व में 20 दिन की लगभग 280 किमी0 यात्रा में चमोली जिले के अन्तर्गत श्रद्धालुओ द्वारा लगभग 400 किमी0 पैदल मार्ग एंव 300 किमी0 मोटर मार्ग के

साथ–साथ कुमॉऊ के विभिन्न जिलो से भाग लेने वाले श्रद्वालुओ द्वारा लगभग 1500 किमी0 सम्पर्क/सहायक मार्गो का उपयोग दुनिया की इस अद्भुत ऐतिहासिक यात्रा में पगडंडियो, नदी, नालों, चट्टानो, पर्वतो, जंगलो, बुग्यालो, हिमालय ग्लेशियर तथा समुद्रतल से 17500 फीट की ऊँचाई को पार किया जाता है।वर्ष 1951, 1968, 1987 एवं 2000 में आयोजित श्री नन्दादेवी राजजात के आयोजन के बाद यात्रा को अत्यधिक प्रचार–प्रसार पूरी दुनिया में मिला है।

राजजात यात्रा के दौरान कुल 26 पड़ाव चमोली जिले में चिन्हित किये गये है। प्रत्येक पड़ाव पर धार्मिक विधि–विधान से पूजा अर्चना की जाती है, तथा अलग–अलग स्थानो से आयी देवी की डोलिया इसमें शामिल होती है। राजजात में शामिल होने वाली डोलियो में अल्मोड़ा की नन्दा–सुनदा और कुरूड़ की राजजेश्वरी, की बधाण एंव दशोली एंव लाता की नंदादेवी की डोली प्रमुख है।

श्रीयंत्रः– आठवीं शताब्दी में चॉदपुरगढ़ी के तृतीय राजा पूरनपाल ने गढ़ी स्थित श्रीयंत्र को पूजा अर्चना के बाद गुरू ग्राम नौटी में भूमिगत किया और इसकी पूजा अर्चना का भार अपने पुरोहित नौटियालो को सौंप दिया, तबसे नन्दा नौटियालो की ईष्ट देवी और धियाणी (पुत्री स्वरूप) मानी गयी।

चौसिंगिया खाडूः– राजजात यात्रा में चौसिंगिया खाडू (चार सिंगो वाली भेड़) का विशेष महत्व है। राजवंशी कुंवर नौटी में आकर अपनी ईष्टदेवी नन्दा देवी के पास राजजात की मनौती करते है, जिसके उपरान्त चौसिंगिया खाडू इसी क्षेत्र में पैदा हो जाता है। सम्पूर्ण राजजात का नेतृत्व चौसिंगिया खाडू करता है, जिसे स्थानीय भाषा में **''राजजात अगवान''** कहा जाता है।

छंतोलीः– देवी के मायके पक्ष के देवी–देवताओ को राजजात यात्रा में शामिल करने के लिए विभिन्न गांवो के पुरोहित रिंगाल की छतौलिया लेकर यात्रा में शामिल होते है। वहीं ससुराल क्षेत्र के गावों के देवी देवता वहां के पुरोहितो सहित भोजपत्र की छतौलिया लेकर यात्रा में प्रवेश करते है। होमकुण्ड में मेंढ़ें(खाडू) की विदाई के समय मायके की रिंगाल की छतौलियो को वहीं विसर्जित कर दिया जाता है, तथा ससुराल पक्ष की छतौलियो को पुरोहित अपने साथ वापसप्रसाद के रूप में लाते है।

रूपकुण्ड रहस्यः– एक बार नन्दा देवी अपनी सहेलियो के साथ त्रिशूली पर्वत से दूर कन्नौज राज्य में पुष्पक विमान से पंहुची। जब कन्नौज की रानी वल्लभा ने उनके आने का कारण पूछा तो देवी ने रानी से एक दिन के लिए राज्य की मांग की जिसे न देने पर देवी ने रूष्ठ होकर श्राप दे डाला। श्राप के दुष्प्रभाव राज्य में अकाल पड़ने लगे। इससे मुक्त होने के लिए कन्नौज के राजा जसधवल ने नन्दा देवी राजजात की मनौती रखी जिससे दुष्प्रभावो का अन्त हुआ। इसके उपरान्त राजा जसधवल अपने दल–बल, परिवार, नृतकियो एवं गर्भवती पत्नी के साथ राजजात यात्रा में शामिल होने के लिए निकल पड़े एवं राजजात यात्रा मार्ग के अन्तिम गांव वाण में राजजात में शामिल हुए।

प्राचीन मान्यताओ के अनुसार वाण गांव से आगे गाजे–बाजे, जूते, चमड़े की वस्तुए, स्त्रिया, बच्चे आदि का प्रवेश निषिध था, परन्तु राजा जसधवल को समझाये जाने के उपरान्त भी वह नियमो के विपरीत पूरे राजसी ठाट–बाट के साथ आगे बढ़ने लगे। यात्रा के नियमो का पालन होता न देख भीषण दुर्घटना की आशंका से स्थानीय यात्री वापस लौट गये। राजजात वाण, गौरोलीपातल होकर निराली धार पहुची जहां पर रात में नृतकियो के नाचने पर देवी ने रूष्ठ होकर उन्हे शिला में परिवर्तित कर दिया, तभी से इस स्थान का नाम पातरनचोनिया पड़ गया। इसके आगे गंगतोली गुफा में रानी ने एक कन्या को जन्म दिया। राजा के साथ आये जो लोग ज्यूरांगलीधार पहुच गये थे, वे हिमनद के साथ रूपकुण्ड में समा गये तथा राजा, रानी एवं कन्या की मृत्यु भयंकर वज्रवृष्टि के कारण हुई। रूपकुण्ड में मानव शरीर कंकाल और अन्य प्राप्त वस्तुओं का कई वैज्ञानिको ने रेडियो कार्बन विधि से पता लगाया कि ये नर कंकाल लगभग **650 वर्ष** पुराने है, जिससे **14वीं शताब्दी** के राजा जसधवल की यात्रा की पुष्टि होती है।

ऐसी मान्यता है, कि नन्दा देवी ने आकाशवाणी द्वारा राजा जसधवल के यात्रा दल का समाचार देते हुए कहा कि जब भी मेरे वंशज राजजात में आयेंगे तो वैतरणी में कन्नौज के राजवंश का पितृ तर्पण करेगें।

नन्दादेवी राजजात 2014 हेतु यात्रा मार्ग में 26 पड़ाव चिन्हित किये गये है, जिसमें प्रमुख पडावो का अपना ही विशिष्ट महत्व है जो निम्नवत हैः–

प्रथम पड़ाव –ईड़ावधाणी (10 किलोमीटर) :–नौटी में यात्रा के शुभारम्भ पर अपार भीड़ होती है। गाजे–बाजे व भंकोरों सहित भगवती नन्दा को हजारों लोग विदा करते हैं। भवगती वचन निभाने के लिए ईड़ावधाणी पूजा लेने जाती है। मार्ग में छंतौली, ल्यूइसा, सिंलगी, चौड़ती, हेलुड़ी में माँ भगवती का आदर–सत्कार होता है, और भगवती तथा चौसिंगा खाडू रात्री विश्राम हेतु ईड़ाबधाणी पहुँचते हैं। जहाँ रातभर जागरण होता है, पास ही अलकनन्दा और पिण्ड़र के संगम पर कर्ण के नाम पर कर्णप्रयाग शहर में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ रात्रि विश्राम करती है।

दूसरा पड़ाव – नौटी (10 किलोमीटर) :– ईड़ाबधाणी से दूसरे दिन वापस नौटी के लिए रवाना होती है, मार्ग में रिठोली, जाख, दियारकोट, कुकड़े पुडियाणी, कनोट, झड़कण्डे व नैंणी गाँवों में पूजा लेकर रात्रि विश्राम हेतु राजगुरू परिवार के गाँव नौटी पहुँचते हैं, मन्दिर में रातभर जागर होते हैं।

तीसरा पड़ाव – काँसुवा (10 किलोमीटर) :– नौटी से नन्दादेवी राजजात की कैलाश के लिये विदाई के समय गाँव के नर–नारी, बच्चे नम आँखों से विदा करते हैं। नैणी व देवल गड़सारी की छंतोलियाँ बैनोली गाँव से पहले यात्रा में शामिल होती हैं। यात्रा गढ़वाल के राजवंशी कुंवरों के मूल गाँव कांसुवा पहुँचती है, यहाँ पर परम्परागत रूप से यात्रियों का भव्य स्वागत होता है।राजा के छोटे भाई के गाँव कांसुवा में नन्दादेवी सर्वप्रथम चार सींग वाले मेंढ़े और पवित्र रिंगाल की राज छंतौली की पूजा अर्चना होती है।

चौथा पड़ाव :– सेम (10 किलोमीटर) :–कांसुवा से सेम रवाना होने पर कांसुवा गाँव (महादेव घाट मन्दिर है) में नन्दादेवी की पवित्र राज छंतौली कोटी के ड्यूणी ब्राह्णों को सौंपी जाती हैं। तत्पश्चात गढ़वाल की प्रथम राजधानी चाँदपुरगढ़ में गढ़वाल नरेश की शाही पूजा होती है। जिसे देखने गढ़वाल–कुमाऊँ क्षेत्र के यात्री बड़ी संख्या में आते हैं। यहीं पर कैलापीर में कालिका देवी का भव्य मन्दिर व चाँदपुरगढ़ी के गढ़वाल राज्य की प्रथम राजधानी के महल व किले हैं, तत्पश्चात उज्ज्वलपुर व तोप में पूजा पाकर देवी सेम पहुँचती है। यहाँ पर गैरोली व चमोला की छंतौलियाँ यात्रा में शामिल होती हैं। यहीं नन्दादेवी का प्राचीन मन्दिर भी सुशोभित हैं, यहाँ रातभर जागर व विशेष पूजा अर्चना की जाती है, तीर्थ यात्रियों के लिए चाँदपुरगढ़ी के समीप आदिबद्री भी विशेष आकर्षण का केन्द्र रहता है।

पाँचवा पड़ाव :– कोटी (10 किलोमीटर) :–सेम से कोटी जाने के लिए धारकोट तक थोड़ा चढाई है, धारकोट, धण्डियाल व सिमतौली गाँवों में पूजा पाकर यात्रा सितोलीधार पहुँचती है। यहाँ पर भगवती से कोटिश प्रार्थना की जाती है। इसीलिए धार के दूसरी तरफ नन्दादेवी मन्दिर कोटि व मैती पहुँचती है, यहाँ पर विशेष पूजा होती है। यहीं पर खण्डूड़ा, रतूड़ा, चूलाकोट, थापली को बंगाली के लाटू यात्रा में शामिल होते हैं, रात में मन्दिर में जागरण होता है, यहाँ प्राचीन पत्थर की सुन्दर मूर्तियाँ हैं, लाटू व जीतू बगड्वाल का मन्दिर भी गाँव में है।

छठा पड़ाव :– भगोती (12 किलोमीटर) :–कोटी से भगोती रवाना होने पर धतोड़ा के खेतों में भगवती के पहलवानों का मल्लयुद्ध होता है, इस युद्ध को देखने के लिए सम्पूर्ण क्षेत्र का विशाल मेला यहाँ पर लग जाता है। कोटी के धतोड़ा, बम्याला, कण्डवाल गाँव, चौरीखाल में कण्ड़वाल गाँव, छैकुड़ा और भनोड़ा की छंतोलियाँ राजजात यात्रा में शामिल होती हैं। भगोती पहुँचने पर भगवती व यात्रा दल का भव्य स्वागत किया जाता है, यह भगवती के मायके क्षेत्र का अन्तिम पड़ाव है। भगवती के नाम से ही भगोती गाँव का नाम पड़ा है।

सातवाँ पड़ाव :– कुलसारी (12 किलोमीटर):–भगोती से केदारू देवता की छंतोली भी यात्रा में शामिल होती है। भगोती गाँव की सीमा पर क्यूर गधेरे पर किमोली, नैंणी की छंतोलियों का मिलन होता है। यहाँ पर भगवती कई घण्टों के अनुनय विनय के बाद मायके से ससुराल क्यूर गधेरे को पार कर प्रवेश करती है। यहाँ पर सम्पूर्ण पिण्ड़ घाटी का सबसे बड़ा मेला लगता है, चाँदपुर व सिरगुर पट्टी की सभी छंतोलियाँ यहाँ पर इकट्ठा होकर भगवती के ससुराल क्षेत्र में पदार्पण करती हैं। यहाँ से बुटोला थोकदारों, सयानों का सहयोग यात्रा को प्राप्त होता है। रास्ते में नाराणबगड़, पन्ती, बैनोली, मींग गधेरा, हरमनी नगर कोटी का यात्रा में भव्य स्वागत सत्कार होता है। यहाँ पर राजजात हमेशा अमावस्या के दिन पहुँचती है, अमावस्या की काल रात्रि को काली यंत्र को भूमि से निकालकर पूजा–अर्चना की जाती है, और फिर अगली यात्रा तक इसके भूमिगत कर दिया जाता है। रातभर देवी पूजन व देवी जागरण सम्पन्न किये जाते हैं,

यहाँ दक्षिण काली, त्रिमुखी शिव, लक्ष्मी नारायण, हनुमान, सूर्य भगवान का मन्दिर है, तथा बाहर के क्षेत्र में लक्ष्मी जी के चरणपादुका भी हैं। कालीसार रूप में काली की पूजा करने पर इस स्थान का नाम कुलसारी पड़ा।

आठवाँ पड़ाव :–चेपड़ियों (10 किलोमीटर) :–कुलसारी से चलने पर थराली में विशाल मेला लगता है, थराली के पास ही देवराड़ा गाँव है, जहाँ बधाण की राजराजेश्वर नन्दादेवी वर्ष में 06 महीने रहती है, और शेष 06 महीने कुरूड़ (दशोली) में रहती है, चेपड़ियों बुटोला थोकदारों का गाँव है। यहाँ पर नन्दादेवी की स्थापना घर पर ही की गयी है, कोई विशेष देवी मन्दिर नहीं है, गाँव के नीचे वेतालेश्वर शिव मन्दिर सुशोभित है। रात्रि विश्राम के समय लगभग सभी लोग देवी जागरण में व्यस्त रहते हैं।

नौवाँ पड़ाव :– नन्दकेशरी (5 किलोमीटर) :– नन्दकेशरी में सुरई के पेड़ पर केश अटक जाने के कारण देवी–दैंत्य से बचने के लिए पेड़ में छिप गई और भैरव को याद किया। तत्पश्चात् महादेव ने उनकी रक्षा की, जिस कारण इस स्थल का नाम नन्दकेशरी पड़ गया। सम्पूर्ण यात्रा के दौरान मात्र नन्दकेशरी में ही मन्दिरों का समूह पहली बार दिखलायी पड़ता है। नन्दकेशरी सम्पूर्ण गढ़वाल एवं सम्पूर्ण कुमाऊँ क्षेत्र के देवी देवताओं का मिलन स्थल भी कहलाता है। जिसे सांस्कृतिक मिलन केन्द्र भी कहना उचित होगा।

दशंवा पड़ाव :– फल्दियागाँव (10 किलोमीटर) :–दूसरे दिन प्रातः नंदाराजजात नन्दकेशरी से फल्दियागाँव के लिए प्रस्थान करती है, रास्ते में पूर्णासेरा पर भेकलझाड़ी का देवी यात्रा में विशेष महत्व है, माना जाता है कि जब देवी कैलाश जा रही थी, तब दैंत्यों से बचने के लिए भागते हुए लहलहाते खेतों में रास्ता बनाकर बालियों के बीच छिप गई, दैंत्य द्वारा देख एवं पहचान लिये जाने पर देवी क्रोधित हो गई और उस स्थान पर कभी भी फसल हरी न होने का श्राप दे दिया। शापित होने की वजह से इस स्थल पूर्णाशोरा पर आज भी फसल नहीं उगती है, जिस झाड़ी में छिपकर बाद में देवी ने दैंत्य से अपनी जान बचाई वह झाड़ी देवी कृपा से हर मौसम में हरी–भरी दिखलायी पड़ती है।

ग्यारहवाँ पड़ाव :– मुन्दोली (10 किलोमीटर) :–फल्दिया गाँव से आगे पिलफाड़ा के नन्दादेवी मन्दिर में बड़ा मेला लगता है यहाँ पर भगवती ने शस्त्रों से पिलवा दैंत्य को फाड़ डाला था। इसलिए इस स्थान पर भगवती का नाम पिलफाड़ा पड़ा। ल्वाणी, बगरिगाड़ में पूजा स्वागत पाते हुए यात्रा रात्रि विश्राम हेतु मुन्दोली पहुँचती है। यहाँ पर महिलायें व पुरूष संयुक्त रूप से स्वागत गीत झौड़ा के रूप में गाते हैं, इसी प्रकार विदाई के गीत होते हैं। मुन्दोली के ऊपर लोहाजंग की तरफ गाँव की परम्परा है कि जिसका वंश मिटता है, यानी जिसका कोई सन्तान नहीं होती है, वहीं इस स्थान पर सुरई पेड़ लगाता है और चबूतरा बनाता है। स्मृतिस्वरूप चबूतरे पर पत्थर भी लगता है। और यह चबूतरा उसी व्यक्ति के नाम से प्रसिद्ध होता है।

बारहवाँ पड़ाव :–वाण (15 किलोमीटर) :–मुन्दोली से आगे लोहाजंग (ल्वाजिंग) एक मनोरम स्थल है, यहाँ से हिमालय काफी नजदीक दिखलायी देता है, पूरा वधाण परगना व कुमाऊँ की पहाड़ियाँ दूर–दूर तक दिखलायी देती हैं। लोकगीतों के आधार पर बताया जाता है कि भगवती नन्दा यहाँ लोहासार नाम के दैंत्य का संहार किया था, उसके साथ हुए जंग की स्मृति में इस स्थान का नाम ल्वाजिंग पड़ा। लोहाजंग में नन्दादेवी का चबूतरा है, घौसिंह, काली, दानू तथा नन्दादेवी के मन्दिर हैं, भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन जिस रास्ते ग्वालदम से आली बुग्याल तक गये थे, उसे आज तक लॉर्ड कर्जन रोड़ के नाम से जाना जाता था। लेकिन अब इसे नन्दादेवी राजजात समिति के आग्रह पर आम जनता द्वारा राजजात द्वारा राजजात पथ के नाम से पहचाना जाने लगा है। यहाँ पर पर्यटन्क आवास गृह और वन विभाग गेस्ट हाउस के अतिरिक्त निजी होटल भी यात्रियों को सुविधाएँ प्रदान करते है। वाण में दशोली कुरूड़ की नन्दा, मय लाटू, कण्ड़ारा हिन्डोली, दशमद्वार की नन्दा मय लाटू, केदारू पौल्या, नौना दशोली की नन्दादेवी, नौली का लाटू, मोठा का लाटू, वालम्पा देवी कुमजुंग से ज्वाल्पादेवी की डोली, ल्वाणी से लासी का जाख, खैनुरी का जाख, मंझोटी, काण्डई लाखी का रूप दानू, बूरा का धौंसिंह, जस्यारा, कन्खुल, कपीरी, बद्रीश पंचायत, बद्रीनाथ की छंतोली, उमट्टा, डिम्मर धौंसिंह सुतोल, कोट डंगोली की कटार, स्यारी भैंटी भगवती, बूरा नन्दा, रामणी का त्यूण रजकोटी, लाटू, चन्दनिया पेनखण्ड़ा आदि के 200 के अधिक देवी देवताओं का मिलन होता है। दशोली, दशमद्वार, लाता, अल्मोड़ा, कुरूड़, बधाण की नन्दा देवी डोलियों पर सज धज कर

नंदाराजजात यात्रा में चार चाँद लगाते हैं। वाण से वाण का प्रसिद्ध लाटू देवता व चार सींग के मेंढ़े की अगुवाई में यात्रा आगे बढ़ती है। जाख के देवता का अद्भुत कटार का प्रदर्शन भी यहाँ पर दर्शनीय है। यहाँ स्वर्का का केदारू, मैखुरा की चण्ड़िका, घाट कनौल होकर तथा रैंस, असेड़, सिमली, डुँग्री, सणकोट, नाखोली व जुनेर की छंतोलियाँ चार ताल व चार बुग्यालों का पारकार वाण में राजजात में सम्मिलित होती हैं। वाण में लाटू देवता का मन्दिर देवदार के पेड़ों से घिरा व सटा हुआ है। इस स्थान से लाटु की अगुवाई में यात्रा आगे बढ़ती है।

तेरहवाँ पड़ाव :–गैरोली पातल (10 किलोमीटर) :– वाण से आगे रिणकीधार में भगवती नन्दा ने अपने यात्रा पथ के अन्तिम दैंत्य का संहार किया था, वाण के लाटू देवता के शाौर्य और निष्ठा से प्रसन्न होकर देवी ने अपने गणों से कहा था कि अब वाण का लाटू मेरी यात्रा का अगवान (प्रथ प्रदर्शन) होगा। वाण में लाटू ने यात्रा की पवित्रता के लिए अनेक प्रतिबन्धों का वचन देवी से लिया था, रिणकीधार से आगे कैलगंगा में यात्री स्नान और लिपात्र करते हैं प्राचीन मान्यता है कि इस नदी में चाहे जितना भी पानी हो वाण के लाटू देवता अपना निशान डालकर इसके जलस्तर को इतना कम कर देते हैं कि यात्री आसानी से इसे पारकर लेते हैं। रास्ते में द्वाणीग्वर नामक स्थान है, तत्पश्चात यात्रा घने देवदार और सुरई के जंगल के बीच स्थित गैरोलीपातल में रात्रि विश्राम के लिए पहुँचती है।

चौदहवा पड़ाव :–बेदनी बुग्याल (03 किलोमीटर) :– गैरोलीपातल से यात्रा वैतरणी (बेदनी बुग्याल) पंहुचती है, बेदनी में मीलो ढालदार बुग्याल है, यहा पर बेदनी कुण्ड भी है, बेदनी तक हर वर्ष कुरूड़ से आने वाली नन्दा की डोली की जात होती है, यहा पर महिष मर्दिनी का मन्दिर निर्मित है, यहाँ पर हिमालय की तलहटी में स्थित सुन्दर कुण्ड़ को वेदनीकुण्ड़ कहते हैं। इसमें हिमालय का प्रतिविम्ब सुन्दर दिखाई देता है। वेदनी बुग्याल के समीप ही मीलों लम्बा ढ़ालदार ऑली बुग्याल है। यह बुग्याल भी अपनी मनोहरी छटा के लिए प्रसिद्ध है। यहीं से नाना प्रकार के फूल, वनस्पतियाँ, जड़ी बूटियाँ मिलनी आरम्भ होती हैं। वृक्षों की पंक्ति को गैरोली पातल से ही विदा दे दी जाती है। वृक्षरहित बुग्याल दर्शनीय एवं रोमांचकारी है।

पन्द्रहवा पड़ाव :–पातर नचौंण्याँ (12 किलोमीटर) :–बेदनी से यात्री दल पातर नचौण्याँ पहुँचता है, यहीं पर पूजा के बाद विश्राम होता है इस स्थान का नाम पहले निराली धार था। माना जाता है कि चौदहवीं शताब्दी में कन्नौज के राजा जसधवल ने यात्रा की परम्पराओं का उल्लंघन करते हुए राजजात में शामिल होकर यहाँ पर नर्तकियों से नाच करवाया था, जो देवी कोप से शिला रूप हो गई, तभी से इस स्थान का नाम पातर नचौंण्याँ पड़ा। इस बड़े क्षेत्र में फैले जड़ी–बूटी, फूल, ब्रह्मकमल इत्यादि की सुगन्ध का नशा यात्रियों को महसूस होने लगता है।

सौलहवाँ पड़ाव :–शीलासमुद्र (15 किलोमीटर) :–पातर नचौंण्याँ से तेज चढ़ाई पार कर यात्रा कैलवाविनायक पहुँचती है, यहाँ पर गणेश की भव्य पाषण मूर्ति सुशोभित है। यहाँ से नन्दा घुँघटी व त्रिशूली पर्वत के प्रत्यक्ष प्रदर्शन होते हैं, कैलवाविनायक में धौंसिंह देवी की अगवाई करता है। यहाँ से उसका क्षेत्र आरम्भ होता है, बताया जाता है कि यहाँ पर कैलवा नाम का गण था, जिसे देवी ने वरदान दिया था कि राजजात में तुम्हें रवाजा (चूड़े) इत्यादि चढ़ाये जायेंगे। कैलवाविनायक से आगे बगुवाबासा रमणीय निर्जन स्थान हैं जहाँ भगवती नन्दा देवी के वाहन बाघ का निवास होने के कारण ही इस स्थान का नाम बघुवाबासा पड़ा। यहाँ पर प्रसिद्ध इतिहासकार स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने धर्मशाला बनवायी थी। आगे चलकर बल्लभा स्वेलड़ा (बल्लभा का प्रसूति गृह) है, यहीं पर राजा जसधवल की रानी बल्लभा को राजजात के दौरान प्रसव हुआ था, जो स्थापित हुआ।

रूपकुण्ड़ पहुँचकर यात्री हिमालय की रहस्यमयी बर्फीली झील को देखकर अपनी थकान दूर करते हैं, इस कुण्ड़ में आज भी चौदहवीं शताब्दी के राज जसधवल के यात्रीदल के अस्तिपंजर पड़े हुए हैं। 16200 फीट की ऊँचाई पर स्थित रूपकुण्ड़ के चारों ओर ब्रह्मकमल खिले दिखलायी पड़ते हैं। रूपकुण्ड़ से आगे ज्यूंरागलीधार पूरे यात्रा मार्ग का सर्वाधिक कठिन भाग है, शिालासमुद्र पहुँचने के लिए 17500 फीट ऊँचे इस माउन्टेन पास को पार करना अति आवश्यक होता है। लाटू देवता ने यहाँ पर राजजात के यात्रियों को पार कराने वाला टैक्स देने का प्रावधान किया था, जो आज भी लागू है। ग्लेशियर शिलाओं के समुद्रनुमा वीरान स्थान शिलासमुद्र पर यात्रा रातभर पड़ाव करती है। यहाँ पर प्रातः सूर्य उदय से पहले नन्दा घुँघटी पर्वत में तीन दीपक

और धूप की लौ दिखलायी पड़ती है, इस अलौकित दृश्य को विगत यात्राओं में अनगिनत यात्रियों ने स्वयं अपनी आँखों से देखा और अनुभव किया। कई यात्री सम्पूर्ण रात देवी अराधना में व्यतीत कर देते हैं।

सत्रहवाँ पड़ाव :–चन्दनियाघाट (16 किलोमीटर) :–शिलासमुद्र से प्रातः यात्रीदल होमकुण्ड़ के लिए रवाना होता है, शिलासमुद्र में पिण्ड़ तर्पण किये जाते हैं, थोड़ी दूर चलने पर घीथोपिया स्थान पर देवी ने शिला खड़ी कर रखी है। जिसके बाहर एक रेखा खींची है, देवी ने थके हारे यात्रियों के मनोरंजनार्थ एक नियम बनाया कि इस शिला पर जो यात्री रेखा के बाहर खड़े होकर घी फेंकेगा और जिसका घी शिला पर नहीं चिपकेगा वह वर्णशंकर होगा। आज भी इस दृश्य को देखने पर हंसी मखौल का माहोल उत्पन्न हो जाता है, यात्री दल होमकुण्ड़ पहुँचकर होमकुण्ड़ (यज्ञस्थल) के दर्शन करता है, पवित्रकुण्ड़ के यहाँ स्थित होने पर ही इस स्थान का नाम होमकुण्ड़ रखा गया यहाँ पर सभी मायके वाले अपनी छंतोलियों को विसर्जित कर देते हैं। और ससुराल क्षेत्र की भोजपत्र से बनी छंतोलियाँ व देवी डोलियाँ वापस चली आती हैं, यज्ञ होता है, चार सींग के मेंढ़े की आँखों से अंश्रुधारा गिरने लगती है। यात्रीगण भी इस दृश्य को देख अपने आँसू नहीं थाम पाते, मेंढ़े पर भगवती के जेवर, भेंट उपहार आदि सजाये होते हैं। यहाँ पर धौंसिंह–भौंसिंह देवता जौलधारा से पूजा के लिए कलशों पर पानी लाते हैं, तथा यहीं सुफल भी देते हैं। होमकुण्ड़ में यात्रा विसर्जन के बाद यात्रीदल वापस चंदनियाघाट पहुँचता है, यह स्थान देवी के गण चन्दनिया का है। घनघोर जंगल में सोने का स्थान कम होने पर लोग पेड़ों की आड़ में ही रात बिता देते हैं, होमकुण्ड़ में अष्टमी व नवमी की पूजन की परम्परा रही है, इस वर्ष पूजा अष्टमी नवमी के मिलन पर है, जो सर्वश्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होगी।

अठारहवॉ पड़ाव :–सुतोल (18 किलोमीटर) :–चन्दनिया घाट से सुतोल आने के लिए रिंगाल, देवदार और सुरई के घनघोर जंगल हैं, इसे पार करते हुए यात्री सुतोल गाँव पहुँचते हैं, रास्ते में तातड़ा में धौंसिंह का मन्दिर भी है, पाँच दिन बाद यात्रियों को गाँ और आबादी के दर्शन होते हैं। रूपगंगा और नन्दाकिनी के संगम के दाहिनी ओर बसे सुतोल गाँव के लोग यात्रियों की बड़ी आवाभगत करते हैं। यहाँ पर बधाण की राजराजेश्वरी नन्दा देवी कुरूड़ के पुजारी सभी यात्रियों को सुफल देते हैं, रातभर नृत्यगीत और गढ़वाल के सांस्कृतिक विरासत के दर्शनों से लोग प्रफुलित होते हैं, रास्ते की सारी थकान गायब सी हो जाती है, इसी गाँव से दूसरे दिन कुमाऊँ और बधाण के देवी–देवता और ड़ोलियाँ कनौल, वाण होते हुए अपने–अपने मूल स्थानों को लौट जाते हैं। दशोली और पैनखण्ड़ा के देवी–देवता भी सुतोल से अपने निश्चित मार्गों के लिए राजवंशियों से विदा लेते हैं।

उन्नीसवॉ पड़ाव :–घाट (25 किलोमीटर) :–सुतोल से नन्दाकिनी नन्दी के दाहिने किनारे चलकर सितैल में नन्दाकिनी का पुल पास कर रास्ते भर कैल, चीड़ के घनघोर जंगल मिलते हैं। सितैल में वन विभाग के विश्रामगृह में कुछ देर विश्राम कर देर सांय तक यात्रीदल घाट पहुँचता है।

बीसवा पड़ाव :–नौटी (60 किलोमीटर) :–दूसरे दिन यात्रीदल घाट से बस अथवा अन्य वाहनों द्वारा नन्दप्रयाग, लंगासू में सुफल देते हुए कर्णप्रयाग पहुँचता है। कर्णप्रयाग में कोटि के ड्यूडी ब्राह्मणों द्वारा राजकुंवरों व बारह थोकी ब्राह्मणों आदि को सुफल देकर विदा किया जाता है। कपीरी व बद्रीश पंचायत के यात्रीदल ईड़ाबधाणी में सुफल देते हुए राजकुंवर और राजपुरोहित के साथ शेष यात्री सांय तक नौटी ग्राम में वापस लौट आते हैं।

नौटी की नंदादेवी :–सिद्धपीठ नौटी में भगवती नन्दा देवी की स्वर्ण प्रतिमा पर प्राण प्रतिष्ठा देकर, रिंगाल की पवित्र राज छंतोली व चार सींग के मेंढ़े की विशेष पूजा–अर्जना की जाती है। भगवती नन्दा को मायके से ससुराल भेजने के लिए आभूषणा, वस्त्र, उपहार, मिष्ठान आदि चार सींग के मेंढ़े की पीठ पर फांचे में रखकर कैलाश की ओर विदा किया जाता है। सन् 1974 में कांची कामा कोटि के शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी के मार्गदर्शन में उत्तर भारत का प्रथम श्रीयंत्र मन्दिर की स्थापना कैलाश मानसरोवर के स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने नौटी में श्री नन्दादेवी मन्दिर परिसर में करायी।

कुरूड़ की राजराजेश्वरी :– चमोली जनपद में घाट से 6 किमी0 की दूरी पर नन्दा देवी का प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है। गौड़ ब्राह्मणो के आधिक्य वाले इस गाँव को ''कुरूड़'' नाम से पुकारा जाता है। देवदार के विशालकाय वृक्ष की छांव में यह प्राचीन मन्दिर स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है। इस मन्दिर में नन्दादेवी की दो स्वर्ण प्रतिमाएँ स्थापित है। प्रतिवर्ष ये प्रतिमाएँ डोलियों में विराजमान होती है, तथा वार्षिक जात को स्वरूप प्रदान करती है। एक स्वर्ण प्रतिमा बधाण क्षेत्र

के गाँवों का परिभ्रमण कर बेदनी बुग्याल तक जाती है। दूसरी स्वर्ण प्रतिमा दशोली की डोली में विराजमान होती है, और रामणी से ऊपर स्थित बुग्याल तक जाती है। कुरूड़ (बधाण) की नन्दा को राजराजेश्वरी के नाम से पूजा जाता है। तत्कालीन गढ़वाल के राजा ने कुरूड़ की नन्दा को सम्मान देकर ताम्र पत्र प्रदान किया तथा नन्दा की शक्ति को सम्मान देकर ताम्र पत्र प्रदान कियि था। राजजात में बधाण की नन्दा डोली की भव्य पूजा नन्दकेशरी में राजजात से मिलन के समय होती है, जबकि दशोली की नन्दादेवी की वाण गाँव में राजजात की अन्य डोलियों, छंतोलियों के साथ नन्दामय होकर यात्रा और शक्ति तथा आकर्षण प्रदान करती है।

कुरूड़ मे वार्षिक जात प्रतिवर्ष भाद्रपद माह में आयोजित की जाती है, जो कुरूड़ से चलकर बेदनी तक पहुॅचती है, यहीं बेदनी कुण्ड के समीप निर्मित नन्दा मन्दिर में पूजा–अर्चना के बाद वापस लौटती है। डोली छः माह के लिए देवराड़ा में विश्राम करती है, तथा छह माह बाद पुनः देवी की डोली कुरूड़ मन्दिर में स्थापित की जाती है। नन्दा राज में नन्दा की उत्सव मूर्ति डोली में सुसज्जित होती है, जो पूरी यात्रा में श्रद्धा तथा आकर्षण का केन्द्र होती है। कुरूड़ में प्रतिवर्ष होने वाली नन्दा राज 12 वें वर्ष में होने वाली नन्दा राजजात को सांस्कृतिक जीवन्तता प्रदान करती है। वर्ष 2014 में आयोजित होने वाली राजजात यात्रा कुरूड़ में तीन दिवसीय पूजा–अर्चना के साथ प्रारम्भ होगी। यात्रा चरबंग, उस्तोली, भेंटी, डुंग्री, सूना, चैपड्यो होकर 26 अगस्त को नन्दकेशरी में नौटी और अल्मोड़ा से आने वाली जात के साथ सम्मिलित होगी।

अल्मोडा की नंदादेवी– देवी देवदाओं के क्षेत्र कुमॉयु में नंदा–सुनंदा के रूप में नंदादेवी धर–धर में पूज्य है, कुमायु नरेश माननीय के0सी0 सिंह बाबा के नेतृत्व में अल्मोड़ा के नंदादेवी परिसर में 18 अगस्त से 23 अगस्त तक पूजा एंव अनुष्ठान के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है, 24 अगस्त 2014 को नंदा की डोली वाहन से श्रद्वालुओं के साथ ग्राम मालमा में मल्लिकादेवी मन्दिर में रात्री विश्राम के लिये पहुचेगी, पूजा अर्चाना उपरान्त 25 अगस्त को डोली छानी ल्वेशाल ग्राम के लाटु मन्दिर से गरूड़ बैजनाथ से कोटभ्रमरी पहुचेगी तथा दिनॉक 26 अगस्त को नंदकेशरी मुख्य यात्रा के साथ शामिल होगी।